INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra. **Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans**	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl **Mr. Satish Funne**	136
33	Problems of Rural Migration in India **Mr. B. S. Jogdand**	140
34	White Collar Crime in India **Mr. Bandu Patekar**	143
35	Poverty in India **Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad**	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India **Prof. Dattatraya Mundhe**	150
37	An Approach towards Social Security **R. J. Gaikwad**	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation **Ravindra Kharat**	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries **Shaikh Jahara Abdul Rahim**	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India **Mr. Vaibhav Shendage**	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice **Shesherao Rathod**	166
42	Poverty in An Unorganised Sector **Dr. Sonal Ubale**	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India **Subhash Pole**	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection **Uday Kharat**	176
	हिंदी विभाग	
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या **डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे**	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या **दीपक डोंगरे**	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही **प्रा. दीप्ती होळकर**	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे **डॉ. शशि बाला भट्ट**	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष) **डॉ. अरविंद घोडके**	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम **डॉ. जे.एस.धायगुडे**	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या **डॉ. संगीता आहेर**	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ **डॉ. सय्यद शौकत अली**	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद **डॉ. रजनी शिखरे**	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में) **डॉ. ललिता राठोड**	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य **डॉ. रजनी शिखरे**	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ **डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले**	225
57	भारत में भ्रष्ट्राचार की समस्या **डॉ. आर.के. देशमुख**	229
58	भ्रष्ट्राचार **महादेव करडे**	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव **किरण पवार, कविता जोशी**	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या **डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर**	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल **संतोष नागरे**	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में) **डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या **डॉ. रमेश व्ही.मोरे**	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि **ऋचा राय**	257

में मनुष्य की दुर्दशा आदि को यथार्थ रुप में चित्रित किया है। ग़ज़लकार जहीर कुरैशी पुरे विश्वास एवं उम्मीद के साथ हमें शाश्वत जीवनमूल्य की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं।

"जो सत्यम् है शिवम् है जिन्दगी में
वो जाएगा ही सुन्दर की दिशा में।"[11]

संदर्भ ग्रंथ :

1. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल- डॉ.मधु खराटे, पृ.73
2. साये में धूप- दुष्यंतकुमार, पृ.21
3. वही, पृ.48
4. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष- डॉ.रघुनाथ कश्यप, पृ.73
5. आँधियाँ धीरे चलो- कुँअर बेचैन, पृ.64
6. चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधि ग़ज़लें- संपा. डॉ.मधु खराटे, पृ.49
7. रोशनी का घर- संपा. जितेन्द्र जौहर, पृ.68
8. अशोक अंजुम की प्रतिनिधि ग़ज़लें- अशोक अंजुम,- पृ.56
9. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल- डॉ.अनिलकुमार शर्मा,- पृ.90
10. गिरिराजशरण अग्रवाल की प्रतिनिधि ग़ज़लें- डॉ.शिवाजी देवरे, पृ.74
11. जहीर कुरैशी की चुनिंदा ग़ज़लें- संपा.डॉ.मधु खराटे, पृ.84

ISSN : 2348-7143
October-2019

हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,
र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई.
तह. गेवराई, जि. बीड

प्रा. एच. टी. पोटकुले
हिंदी विभाग,
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर,गढ़ी
तह. गेवराई, जि. बीड

स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज के निर्माण में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है । हमारे देश में कई साहित्यकार हुए जिन्होंने तत्कालीन समाज में स्थित सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए साहित्य सृजन किया । कबीरदास,तुलसीदास,रैदास मीराबाई,सूरदास के साहित्य को जब हम पढ़ते है तो पता चलता है कि उनके काल में समाज में कई कुरीतियाँ व्याप्त थी जिसका उन्होंने डटकर विरोध किया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक के साहित्य में समाज में व्याप्त कुरुतियाँ, विभिन्न समस्याएँ देखने को मिलती है। एक सच्चा साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज में सुधार लाने का सतत प्रयास करता है। इसिलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है । हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के द्वारा समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का चित्रण करके उसके विरुध्द विद्रोह किया है । इस आलेख के माध्यम से साहित्यकार शिवानी और साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में अभिव्यक्त नारी जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

भारतीय समाज में आज भी महिला कमजोर वर्गों में शामिल है । कानूनी और संवैधानिक दृष्टि से अनेक अधिकार प्राप्त होने के साथ ही योजनागत विकास कार्यक्रमों के प्रावधानों के बावजूद भारतीय महिलाओं की स्थिति शोचनीय ही है हालांकि कुछ हद तक उसने अपने आपको उबारा है, लेकिन अभी भी पुर्ण रुपेन उन्नति होना बाकी है। क्योंकि भारतीय महिला सामाजिक कुरी तियों की शिकार बनी हुई है। कथाकार शिवानी ने मुख्य रुप से नारी जीवन के विविध रुप संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है साथ ही कुमाऊँ के सामाजिक जीवन को भी चित्रित किया है। मैत्रेयी पुष्पा युग के प्रति सचेत उपन्यासकार होने के कारण उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी सबंधी विविध समस्याओं पाठकों का ध्यान उनकी और आकर्षित करती हैं और उनका समाधान देने का प्रयास करती है। कथाकार शिवानी और मैत्रेयी पुष्पा ने नारी जीवन संबंधी समस्याओं का व्यापक रुप में चित्रण किया है दहेज,बाल-विवाह,अनमेल-विवाह,विधवा-विवाह,बहुपत्नी प्रथा,वेश्या समस्या,सती प्रथा,नारी घर और बाहर,अवैध मातृत्व की समस्या नारी समानता, अवैध मातृत्व की समस्या का विस्तृत चित्रण अपने साहित्य के माध्यम से किया है ।

दहेज का अर्थ है वह रक्कम जो विवाह के समय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से लड़की के माता-पिता से ली जाती है। वैवाहिक जीवन की कुप्रथा 'दहेज' के कारण कन्या का विवाह माता-पिता के लिए जटील समस्या बन गई है। दहेज कोड़ की तरह समाज के जड़ों में फैल चुका है । पहले भी विवाह के समय पिता अपनी सामर्थ्यानुसार अपनी पुत्री को वस्तुएँ दिया करते थे । किंतु आज समय बदल गया है नहीं बदली तो लोगों की आकांक्षाएँ एवं लालच की प्रवृत्ति । न्याय एवं प्रशासन ने इसे मिटाने के प्रयास के बावजुद आज भी वर पक्ष दहेज के रुप में कन्या पक्ष का शोषण करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में दहेज इस भयावह समस्या पर लेखनी चलाकर उसे समाज के सामने मुखरित करने का प्रयास किया है। आज भी हम समाज में देखते है कि, लड़की के जन्म से ही माता-पिता को उसकी दहेज की चिंता सताने लगती है। जिसकी बेटी बड़ी हो रही हो और उसकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो तो उनकी रातों की नींद ही उड़ जाती है। इसे मैत्रेयी जी ने 'बेतवा बहती रही 'उपन्यास में उर्वशी की माँ की दिन-रात इसी फिक्र में रहती है- " अब लरका देखो मोंडी

के लाने। अब ही देखोगे तब न साल-दो-साल में सम्बन्ध तै हो पाहै। तुम्हे कुछ सोच फिकर नही है। अरे बिटिया जनमत ही से बाप ब्याही की सोचन लगता दहेज जोरन लगता " १.

मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' 'अगनपाखी' इदन्नम,झूला-नट,विजन,कस्तुरी कुंडल बसै उपन्यासों के माध्यम से समाज के सामने ऐसे व्यक्तियों को दिखाया है जो अपने बेटे को पाल-पोसकर बड़ा करते है उस दिन के लिए जब उसका सौदा किया जाए और लड़की वालों से अच्छी कीमत वसूली जाए। इन लालची लोगों को दहेज नही मिलता तो उसका दुष्परिणाम लड़कीवालों को झेलना पड़ता है। ग्रामीण परिवेश और शहरी परिरवेश में व्याप्त दहेज प्रथा की भयावहता को प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार शिवानी जी ने 'श्राप ','पूतोवाली','रय्या' कथाओं में दहेज समस्या का चित्रण करके समाज के लिए वह किस प्रकार घातक है यह बताया है। चौंचरी,बदला,विवर्त्त,कैंजा कथाओं के माध्यम से शिवानी जी ने तत्कालीन सामाजिक विषमताओं के कारण टूटते व बिखरते दाम्पत्य जीवन को प्रस्तुत किया है। मैत्रेयी पुष्पा और शिवानी जी ने दहेज प्रथा कुरीति को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है कि जो लोग दहेज पाने के इच्छुंक हैं वे इस समस्या को विकरालता से अवगत हो जाएँ। आज युवा वर्ग यदि प्रयास करे या इसे मिटाने का संकल्प करे तो दहेज कुप्रथा को समाज से मिटा सकता है। वह अपने विचारों से समाज में जाग्रति एवं चेतना पैदा कर सकता है ताकि सांस्कृतिक तथा सामाजिक प्रतिमान बदल सकें। समाज के जड़ो तक फैली इस भयावह दहेज समस्या को समाज से हटाने के लिए शिवानी जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवा शक्ति को आहवान करते हुए दिखाई देती है। चौंचरी कहानी में श्रीनाथ अपने माता-पिता के मर्जी के खिलाप विवाह करता है,वह भी बिना दहेज के। चौंचरी का पिता कहता है " तुम निश्चय ही देवता हो बेटा ,नहीं तो क्या इस दरिद्र ब्राहमण को ऐसे उबार लेते ? कहाँ राजा भोज तुम और कहा मैं गंगू तेली ! सिवाय कुश कन्या के मेरे पास है ही क्या ?"२

बालविवाह :-

भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक विष के रुप में बाल-विवाह प्रथा का प्रचलन दिखाई देता है। बाल-विवाह में बालक- बालिकाओं विवाह जैसे बंधन में बाँध दिया जाता है जो विवाह शब्द का अर्थ न जानते है या न समझते है। इस क्रुर समस्या से अनेक समस्याएँ जन्म लेती है- नारी का स्वास्थ्य खराब होना,उससे निर्बल सन्तानों का जन्म होना,नारी शिक्षा,विधवा समस्या आदि। इसका प्रमुख कारण है दहेज। माता-पिता यह सोचते है कि अधिक उम्र में विवाह करने पर वर खोजने में कठनाई होती है और लड़की के उम्र के साथ-साथ दहेज की किमत भी बढ़ जाती है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने अगनपाखी',इदन्नम,विजन,कस्तुरी कुंडल बसै उपन्यासों के द्वारा बाल-विवाह समस्या और उसके दुष्परिणामों की अभिव्यक्ति की है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'बेतवा बहती रहे ' उपन्यास में बाल-विधवा की कारुणिक दशा का भी चित्रण किया है। बाल विवाह के कारण शैशव काल में न उसने विवाह का आनंद उठाया और न ही संयोग सुख मिला,मिली तो सिर्फ वैधव्य की पीड़ा ,इसका कारुणिक चित्रण लेखिका ने अंकित किया है । विजय की पत्नी "यह भी नहीं जानती थी कि पति के निधन पर कैसे रोयें। चूड़ी तोड़ने को कहा तो चुपचाप दोनो हात कर दिये .....कांच की चूडिया छन्न-छन्न टूटती रही। बहू देखती रही निर्निमेष। ....पाँव की अंगुलियों पर किसी का हाथ गया, ... बिछिया उतारते ही दहाड़ मारकर रो उठी। लिपट गयी पास बैठी उर्वशी से। उसकी छाती से लगी देर तक सुबकती रही । यह क्या हो रहा है,उस अबोध की समझ से परे था । " ३ आधुनिक उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा मुलतः गाँव की निवासी है और अपने जीवन का अमुल्य समय इन्होंने गाँव में व्यतीत किया है इसी कारण करुणा प्लावित बाल-विधवा का हृदय-द्रावक चित्रण किया है। उपन्यासकार शिवानी जी ने उपनयास में अन्नपूर्णा के बाल विवाह का चित्रण किया है और बाल्यावस्था में विवाह होने के पश्चात उस पर दहेज के लिए मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना का मार्मिक चित्रण किया है। कच्ची वयस में अन्नपूर्णा जब मातृत्व भार सम्भावना से दबी घर लौटती है तो उसके पिताजी उसे पुनः ससुराल नहीं भेजते। अन्नपूर्णा अपनी पुत्री

ISSN : 2348-7143
October-2019

के साथ आजीवन पतिविहीन जीवन को भोगती है। अन्नपूर्णा की बहन कालिन्दी का विवाह भी दहेज के कारण होते-होते रुक जाता है।

वेश्या समस्या :-

वेश्या समस्या समाज में कलंक की तरह फैली है। उपन्यासकार शिवानी का मानना है कि, वेश्याएँ जन्मजात नहीं होती ,परिस्थितियाँ उसे वेश्या बनाती है। किसी भी नारी का वेश्या बनना अपने आप में बहुत बढ़ी दर्दनाक स्थिति है। अपवाद स्वरुप जिसने जिस्म फरोशी को पारम्पारिक रुप से आजीविका का साधन बना रखा हो तो बात अलग है। चण्ड़ी प्रसाद जोशी का मत है कि " भारतीय समाज में विधवा प्रथा,दहेज प्रथा,प्रर्दा प्रथा ,बहु विवाह आदि अनेक सामाजिक कुप्रथाओं से त्रस्त निरीह नारी को जीवित रहने के लिए एकमात्र यही आर्थिक स्वालंबन शेष था कि वह वेश्या बनकर शरीर बेचे । उचित संरक्षण के अभाव में तथा उचित वैवाहिक चुनाव न होने पर अनेक मनोवैज्ञानिक असंगतियाँ इसके नारियों को यदि स्वालंबी बनना है तो इस जर्जर समाज ने केवल वेश्या पेशे की ही व्यवस्था की है। "४

शिवानी जी ने 'कृष्णकली,रथ्या,करिए छिमा' वेश्या समस्या का दर्दनाक चित्र समाज के सामने प्रस्तुत किया है। 'रथ्या'इस लघु उपन्यास में शिवानी जी ने बलात्कार से पीड़ित बसन्ती की कहानी को प्रस्तुत किया है। बसन्ती एक सर्कस में काम करती है और वही पर सर्कस का मैनेजर उसपर अत्याचार,बलात्कार करता है,मजबूरन बसन्ती को वेश्या बनकर जीवन यापन करना पडता है। उपन्यासकार शिवानी अपने उपन्यासों के माध्यम से वेश्या जीवन से बचने-बचाने के संकेत देती है। समाज में स्थित वेश्या जीवन को उकेरते हुए वह कहती है कि वेश्या बनने से पहले वह भी एक सामान्य स्त्री है,यदि पुरुष समाज उसे जबरन वेश्या बनाता है तो गुनाहगार को दण्डित किया जाना चाहिए। मैत्रेयी पुष्पा ने अगनपाखी, कबुतरी,इदन्नम,झूला-नट,विजन,कस्तुरी कुंडल बसै उपन्यासों के माध्यम से पुरुषात्मक समाज में ऐसे व्यक्ति आज भी विद्यमान है जो लड़कियों को अगवा करके उनको वेश्या बनाने पर मजबूर करते हैं इनके कारण ही समाज में बाल वेश्यावृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। वेश्यावृत्ति के कारणों को उजागर करके बेरोजगारी एवं निर्धनता,आर्थिक विपन्नता नारी को वेश्या बनने के लिए किस प्रकार मजबूर करती है इसका वास्तविक चित्र अंकित किया है।

अवैध मातृत्व की समस्या :-

यह समस्या आधुनिक समाज मे प्रमुख समस्या के रुप में सामने आ रही है । इसका प्रमुख कारण है , आज समाज में लड़कियों पर जो बलात्कार हो रहे है और इसमें दिनों-दिन बढ़ोत्तरी हो रही है। यही कारण है की यह समस्या समाज में अपनी जड़े मजबूत कर रही है। इसी समस्या का चित्रण कथाकार शिवानी जी ने 'किशनुली का ढाँट,करिए छिमा,तीसरा बेटा,भूमि सुता ' उपन्यासों में अवैध मातृत्व की समस्या किस प्रकार पनप रही है इसका चित्रण किया है । साथ ही उस अवैध संतान को मातृत्व एवं वैधता प्रदान करना इस बात को चित्रित किया है ।

विधवा समस्या :-

भारतीय समाज आज भी प्रथाओ एवं मान्यताओं से ग्रस्त है । समाज में दहेज प्रथा युगों से चली आ रही है। आर्थिक विपन्नता के कारण माता-पिता अपनी योग्य बेटी का अनमेल विवाह कर देते है । इसका विपरित परिणाम नारी विधवा हो जाती है। 'इदन्नम,झूला-नट, कस्तुरी कुंडल बसै,चाक,बेतवा बहती रही इन उपन्यासों में पुरुषप्रधान समाज में विधवा नारी पुरुष के शोषण की शिकार तो होती है साथ ही वहीं नारी स्त्री के शोषण की भी शिकार होती है इसका कारुणिक चित्रण किया है। समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि शरीर को जीवित रखने के लिए जल,वायू,भोजन। जिस समाज में महिलायें उपेक्षा,तिरस्कार अन्याय, आत्याचार की शिकार होती है वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता। इसी लिए समाज में स्थित नारी जीवन की समस्याओं को रोक लगाना